

# शिक्षा का अधिकार

R.N.I. No.-UTTHIN/2014/59625

केन्द्रीय संचार ब्यूरो (सीबीसी) द्वारा  
विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

वर्ष 11 अंक 01

हरिद्वार, बुधवार 25 सितम्बर 2024

पाक्षिक

मूल्य 2.00 रुपया

पृष्ठ 4

## दीक्षांत समारोह में राज्यपाल ने दी छात्र-छात्राओं को उपाधि

हरिद्वार (शिक्षा का अधिकार)। राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह (सेनि) ने कोर विश्वविद्यालय, रुड़की के प्रथम दीक्षांत समारोह में बतौर मुख्य अतिथि शिरकत करते हुए उत्तीर्ण हुए छात्र-छात्राओं को मेडल और उपाधि प्रदान की। इस अवसर पर उन्होंने कोर विश्वविद्यालय में आयोजित ज्ञान समागम की स्मारिका का अनावरण किया।

दीक्षांत समारोह में विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए राज्यपाल ने कहा कि आप सभी अपने जीवन के एक नए चरण में प्रवेश करने जा रहे हैं। आपके समक्ष नई-नई चुनौतियां और अवसर होंगे। आप सभी अपनी मेहनत और कार्यकुशलता के चुनौतियों को अवसरों में बदलें। आज तेज गति से बदल रही दुनिया को देखते हुए हमें भी लीक से हटकर सोचना होगा। उन्होंने कहा कि आप रोजगार हेतु कतार में लगने की बजाय स्वयं रोजगार देने वाले बनें। उन्होंने विश्वास जताया कि इस संस्थान में प्राप्त ज्ञान और कौशल के बल पर विद्यार्थी उन चुनौतियों का सामना करने और उभरते अवसरों का लाभ उठाने में सक्षम होंगे।

राज्यपाल ने कहा कि आज सचमुच आप सभी को देखकर लग रहा कि हमारी युवा शक्ति, हमारे स्वप्न हमको विकसित भारत की ओर लेकर जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि यह खुशी की बात है कि मेडल



एवं उपाधि प्राप्त करने वालों में हमारी बेटियों की संख्या अधिक है। राज्यपाल ने उपाधि प्राप्त करने वाले छात्रों से कहा कि आप उपाधि प्राप्त कर राष्ट्र, समाज और जनहित में कार्य करेंगे। उन्होंने उपाधि प्राप्त छात्रों से

कहा कि यहां से निकलने के उपरांत आपको सोच, विचार और धारणा से कार्य करना होगा, आपकी जिम्मेदारियां और भी बढ़ने वाली हैं।

राज्यपाल ने कहा कि जिस प्रकार

टेक्नोलॉजी दस्तक दे रही है। जिस प्रकार आर्टिफिशिएल इंटेलिजेंस, मेटावर्स, क्वान्टम कंप्यूटिंग, स्पेस, साइबर, नेरोटिक्स टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में आपको बेहतर अवसर मिलने वाले हैं। उन्होंने कहा कि

आज के युग में संवाद बहुत जरूरी है। उन्होंने कहा कि 21वीं सदी का तीसरा दशक भारत का है, जिसमें हमारे युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होगी। राज्यपाल ने कहा कि नया भारत आज तेज गति से विकास यात्रा पर आगे बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि भारत दुनिया की 5वीं बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुका है और अब हम दुनिया की 3वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने पर अग्रसर हैं जिसमें युवाओं की बड़ी भागीदारी होगी।

इस अवसर पर राज्यपाल द्वारा विश्वविद्यालय की प्रथम सेठ रोशन लाल जैन ट्रॉफी, सत्र 2021-24 सुश्री मुस्कान पाण्डेय, दूसरी सेठ रोशन लाल जैन ट्रॉफी, सत्र 2021-23 सुश्री इशिका शर्मा एवं तीसरी सेठ रोशन लाल जैन ट्रॉफी, सत्र 2022-24 श्री अभिषेक जैन को प्रदान की गई। दीक्षांत समारोह की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. मनीष कुमार ने की गई। विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. (डॉ.) अंकुश मित्तल ने विश्वविद्यालय की विगत वर्ष की वार्षिक रिपोर्ट का प्रस्तुतीकरण दिया। इस अवसर पर जिलाधिकारी कर्मदेव सिंह, एसएसपी प्रमोद सिंह डोबाल, विश्वविद्यालय प्रकाशन हाऊस बी.पी.बी. पब्लिकेशन के प्रबंध निदेशक मनीष जैन, अध्यक्ष जेसी जैन, उपाध्यक्ष श्रेयांस जैन, विश्वविद्यालय के संकाय सदस्य एवं छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

## शैक्षिक विकास के लिए यूओयू करेगा अंतरराष्ट्रीय करार

हल्द्वानी (शिक्षा का अधिकार)। उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय (यूओयू), और यूनिवर्सिटी टेरबुका (यूटी), इंडोनेशिया के बीच शैक्षिक, शोध व नवाचार के क्षेत्र में सहयोग के लिए एक करार किया जाना है। करार को लेकर जूम के माध्यम से एक ऑनलाइन बैठक आयोजित की गई। बैठक का प्राथमिक उद्देश्य अकादमिक सहयोग के रास्ते तलाशना, एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) के निर्माण पर चर्चा करना और संयुक्त अनुसंधान, संकाय और छात्र विनिमय कार्यक्रमों और ऑनलाइन शिक्षण संसाधनों के विकास सहित सहयोग के संभावित क्षेत्रों की पहचान करना था। जैसे कि मैसिव ओपन ऑनलाइन कोर्स (MOOC) और ओपन एजुकेशनल रिसोर्स (OER)। बैठक की शुरुआत यूओयू में कंप्यूटर विज्ञान के निदेशक और अंतरराष्ट्रीय संबंधों के प्रभारी डॉ. जीतेंद्र पांडे के स्वागत भाषण से हुई, जिन्होंने सहयोग के महत्व पर जोर दिया और भविष्य की साझेदारी के बारे में आशावाद व्यक्त किया।

यूओयू के कुलपति प्रोफेसर ओ पी एस नेगी ने यूनिवर्सिटी टेरबुका के साथ सहयोग करने के अवसर पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए परिचयात्मक टिप्पणी दी। उन्होंने आज के वैश्वीकृत शिक्षा क्षेत्र में साझेदारी के महत्व पर प्रकाश डाला और रिश्तों को बढ़ावा देने के लिए यूओयू की प्रतिबद्धता को रेखांकित किया जो दोनों संस्थानों की शैक्षणिक और अनुसंधान क्षमताओं को बढ़ाएगा। प्रो. नेगी ने ऐसे सहयोगों के माध्यम से, विशेष रूप से दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में, अपने वैश्विक पदचिह्न का विस्तार करने के यूओयू के दृष्टिकोण को रेखांकित किया। यूनिवर्सिटी टेरबुका (यूटी) के रिसर्च, इनोवेशन, पार्टनरशिप और बिजनेस के

वाइस चायनेक्टर डॉ. रहमत बुदिमन ने अपना परिचय देते हुए कहा कि यूओयू के साथ सार्थक साझेदारी स्थापित करने के लिए उनका विश्वविद्यालय अति उत्साहित है। उन्होंने दोनों संस्थानों के बीच तालमेल के बारे में बात की, विशेष रूप से दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में, और कैसे दोनों विचारों, संसाधनों और विशेषज्ञता के आदान-प्रदान से पारस्परिक रूप से लाभान्वित हो सकते हैं। डॉ. बुदिमन ने दूरस्थ शिक्षा और प्रौद्योगिकी-संचालित शिक्षा में यूटी की ताकत पर जोर दिया, जो यूओयू के अपने दृष्टिकोण के अनुरूप है। यूटी, इंडोनेशिया में साझेदारी और अंतरराष्ट्रीय मामलों के उपनिदेशालय के प्रमुख श्री फौजी रहमान कोसासिह ने यूनिवर्सिटी टेरबुका का एक विस्तृत परिचय प्रस्तुत किया, जिसमें दूरस्थ शिक्षा में इसकी ताकत और शिक्षण और सीखने के लिए इसके अभिनव दृष्टिकोण पर ध्यान केंद्रित किया गया। इसके बाद गहन चर्चा हुई, जिसके दौरान दोनों संस्थानों ने सहयोग के लिए कई प्रमुख क्षेत्रों की पहचान की। इनमें संयुक्त अनुसंधान पहल शामिल हैं, विशेष रूप से मुक्त और दूरस्थ शिक्षा (ओडीएल) और शैक्षिक प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में, एमओओसी और ओईआर का विकास, संकाय और छात्र आदान-प्रदान, और संयुक्त सेमिनार और सम्मेलनों का संगठन। दोनों पक्ष अनुसंधान और शैक्षणिक कौशल में सुधार लाने के उद्देश्य से संकाय विकास कार्यक्रमों के लिए अवसर पैदा करने पर सहमत हुए। समझौता ज्ञापन (एमओयू) के मसौदे पर चर्चा की गई, जिसमें यूओयू प्रारंभिक मसौदा तैयार करने और अक्टूबर 2024 के अंत तक यूटी को भेजने पर सहमत हुआ। यूटी मसौदे की समीक्षा करेगा और दो सप्ताह के भीतर प्रतिक्रिया प्रदान करेगा।

## शिक्षा विभाग में नियुक्ति प्रक्रिया में तेजी लायें अधिकारी : डॉ. धन सिंह

सीआरपी-बीआरपी, अतिथि शिक्षक व चतुर्थ श्रेणी के पदों को भरने के निर्देश

श्रीनगर (शिक्षा का अधिकार)। सूबे में गुणवत्तापरक शिक्षा के लिये सरकार द्वारा तमाम प्रयास किये जा रहे हैं। जिसके तहत विभाग के अंतर्गत रिक्त चल रहे सीआरपी-बीआरपी, चतुर्थ श्रेणी, अतिथि शिक्षक एवं प्राथमिक शिक्षकों के पदों को शीघ्र भरा जायेगा। इस संबंध में विभागीय अधिकारियों को जरूरी निर्देश दे दिये गये हैं। प्राथमिक शिक्षकों के रिक्त पदों पर तीसरे चरण की काउंसलिंग के लिये 27 सितम्बर की तिथि निर्धारित कर दी गई है। प्रदेश के विद्यालयी शिक्षा मंत्री डॉ. धन सिंह रावत ने विद्यालयी शिक्षा विभाग की समीक्षा बैठक लेते हुए शिक्षा व्यवस्था के सुदृढीकरण को लेकर विभागीय अधिकारियों के साथ विस्तृत चर्चा की। डॉ. रावत ने बताया कि प्रदेश में शैक्षणिक गतिविधियों में सुधार के लिये विभाग में लम्बे समय से रिक्त चल रहे पदों को शीघ्र भरा जायेगा।

उन्होंने बताया कि समग्र शिक्षा के अंतर्गत सीआरपी-बीआरपी के 955 पदों पर भर्ती प्रक्रिया अंतिम चरण में है। जिसको एक माह के भीतर पूर्ण करने के निर्देश अधिकारियों को दे दिये गये हैं। इसी प्रकार चतुर्थ श्रेणी के लगभग 2500 पदों पर भी भर्ती प्रक्रिया शीघ्र शुरू करने को कहा गया है। उन्होंने कहा कि पदोन्नति के पदों को भरे जाने के लिये पूर्व की बैठकों में लिये गये निर्णयों के अनुसार शिक्षकों की प्रोन्नति की प्रक्रिया भी शीघ्र शुरू करने के निर्देश विभागीय अधिकारियों को दिये गये। प्रदेश में प्राथमिक शिक्षकों के रिक्त पदों के भर्ती प्रक्रिया के तहत करीब 1400 पदों के लिये तीसरे चरण की काउंसलिंग 27 सितम्बर को आयोजित की जायेगी जिसके लिये सभी



जिला शिक्षा अधिकारी बेसिक को आवश्यक दिशा निर्देश जारी करने को कहा गया है ताकि सभी जनपदों में रिक्त पदों के सापेक्ष एक ही दिन काउंसलिंग का आयोजन किया जा सके। विभागीय मंत्री ने अधिकारियों को डायट एवं एससीईआरटी की नियमावली शीघ्र तैयार करने के साथ ही प्रस्ताव शासन को प्रेषित करने के निर्देश दिये। उन्होंने धारा-27 तथा अंतरमंडलीय स्थानांतरण की प्रक्रिया में भी तेजी लाने के निर्देश दिये। उन्होंने केन्द्रीय रक्षा मंत्रालय द्वारा एनसीसी विस्तार योजना को लेकर बुलाई गई बैठक का हवाला देते हुये राज्य

में एनसीसी विस्तार की विस्तृत कार्ययोजना तैयार करने को कहा ताकि केन्द्र सरकार द्वारा स्वीकृत एनसीसी के 7500 सीटों को विधिवत भरा जा सके। बैठक में विद्यालयी शिक्षा सचिव रविनाथ रमन, महानिदेशक विद्यालयी शिक्षा झरना कमठान, निदेशक प्राथमिक शिक्षा आर के उनियाल, निदेशक माध्यमिक शिक्षा लीलाधर ब्यास, अपर निदेशक प्राथमिक शिक्षा रघुनाथ लाल, अपर परियोजना निदेशक समग्र शिक्षा डॉ. मुकुल सती, पदमेन्द्र सकलानी, अनु सचिव विकास श्रीवास्तव सहित अन्य विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे।

## शिक्षा प्रत्येक मनुष्य का मौलिक अधिकार

शिक्षा एक ऐसा धन है जिसे ना तो कोई चुरा सकता है और ना ही कोई छीन सकता। यह एक मात्र ऐसा धन है जो बाँटने पर कम नहीं होता, बल्कि इसके विपरीत बाँटने पर बढ़ता ही जाता है। हमने देखा होगा कि हमारे समाज में जो शिक्षित व्यक्ति होते हैं उनका एक अलग ही मान सम्मान होता है और लोग उन्हें हमारे समाज में इज्जत भी देते हैं। इसलिए हर व्यक्ति चाहता है कि वह एक साक्षर हो प्रशिक्षित हो इसीलिए आज के समय में हमारे जीवन में पढ़ाई का बहुत अधिक महत्व हो गया है। इसीलिए आपको यह याद रखना है कि शिक्षा हमारे लिए बहुत जरूरी है इसकी वजह से हमें हमारे समाज में सम्मान मिलता है जिससे हम समाज में सर उठा कर जी सकते हैं। शिक्षा ही जीवन का सार है। शिक्षा स्त्री और पुरुषों दोनों के लिए समान रूप से आवश्यक है, क्योंकि स्वास्थ्य और शिक्षित समाज का निर्माण दोनों के द्वारा मिलकर ही किया जाता है। यह उज्वल भविष्य के लिए आवश्यक यंत्र होने के साथ ही देश के विकास और प्रगति में भी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस तरह, उपयुक्त शिक्षा व्यक्तियों के साथ ही राष्ट्र के उज्वल भविष्य का निर्माण करती है। वो केवल शिक्षित नेता ही होते हैं, जो एक राष्ट्र का निर्माण करके, इसे सफलता और प्रगति के रास्ते की ओर ले जाते हैं। अच्छी शिक्षा जीवन में बहुत से उद्देश्यों को प्रदान करती है जैसे व्यक्तिगत उन्नति को बढ़ावा, सामाजिक स्तर में बढ़ावा, सामाजिक स्वास्थ्य में सुधार, आर्थिक प्रगति, राष्ट्र की सफलता, जीवन में लक्ष्यों को निर्धारित करना, हमें सामाजिक मुद्दों के बारे में जागरूक करना और पर्यावरण समस्याओं को सुलझाने के लिए हल प्रदान करना और अन्य सामाजिक मुद्दे आदि। लेकिन यह भी ध्यान देने वाली बात है कि किताबी शिक्षा के साथ-साथ समाजिक शिक्षा भी अत्यंत जरूरी है। दिमागी और सामाजिक रूप से अशिक्षित मनुष्य ही बलात्कार जैसे कुकर्मों को करते हैं। एक राष्ट्र के नागरिक के रूप में शिक्षा अत्यंत जरूरी है, ताकि राष्ट्र प्रगति की ओर अग्रसर हो सके। शिक्षा अधिकार में प्रकाश की किरण है। यह निश्चित रूप से एक अच्छे जीवन की आशा है। इस ग्रह पर शिक्षा प्रत्येक मनुष्य का मौलिक अधिकार है और इस अधिकार को नकारना सही नहीं है।

## टूटते बिखरते सपने.....

शिवा अग्रवाल

प्रार्थना सभा के बाद आज फिर गाँव जा रहा हूँ। कुछ बच्चों के अभिभावकों से मिलना है। गाँव जाने का मकसद तो कुछ और ही है। कक्षा 4 में पढ़ने वाली राखी आज स्कूल नहीं आई है। पिछले कुछ दिन से उसका पढ़ाई में मन नहीं लग रहा था। स्कूल तो अक्सर आ ही जाती है पर घर के लिये दिया जाने वाला काम वह पूरा नहीं कर रही है और ना ही स्कूल में ही सही से पढ़ पा रही है। राखी कक्षा तीन में अच्छे से पढ़ लेती थी क्लासवर्क एवं होमवर्क पूरा करके दिखा देती थी। अब उसका पढ़ाई से हटना मुझे साल रहा था। कल मैंने राखी को कड़क आवाज में कह दिया राखी तुम्हारा रोज का काम है, अपने छोटे भाई को साथ ले आती हो, इसको आंगनवाड़ी में भेजा करो यह कक्षा में ओर बच्चों को डिस्टर्ब तो करता ही है साथ ही तुम भी इसमें ही लगी रहती हो मेरा इतना कहने पर भी राखी ने जवाब नहीं दिया। थोड़ा सहम जरूर गई। उसका भाई रजत साढ़े तीन साल का है। राखी के मम्मी पापा दिहाड़ी पर चले जाते हैं और रजत को राखी के साथ भेज देते हैं। छोटा सा बच्चा जो अभी अबोध है उसको पूरे समय अपनी बहन के साथ रहना पड़ता है। कल लंच के समय एक आइसक्रीम वाला स्कूल के बाहर खड़ा था राखी के भाई ने आइसक्रीम खाने की जिद की। राखी ने पांच रूपए वाली ऑरेंज आइसक्रीम ली। राखी की उम्र भी कुल जमा 9 साल ही तो है। 9 साल का बच्चा होता ही कितना है। समय ने राखी को जल्दी बड़ा कर दिया। वह उसको अपने साथ ला रही है उसका ख्याल रख रही है। राखी ने आइसक्रीम को पहले खुद चूसा फिर उसके बाद अपने भाई के मुँह से लगाई। यह सिलसिला तब तक चलता रहा जब तक आइसक्रीम खत्म नहीं हो गई। हमारे यहाँ बच्चियों की परवरिश ही इस तरह से होती है की लड़कियाँ जल्दी ही बड़ी हो जाती हैं। गाँव में तो आज भी कम उम्र में ही शादी का चलन है। पर यही बहुत से कारक हैं जिनसे बच्चियों के सपने मर जाते हैं। इन्हीं तमाम सवालियों को जेहन में पाले गाँव की तरफ जा रहा था। पृष्ठते हुए राखी के घर पहुँचा तो जो मंजर दिखा वह ओर भावुक कर गया। राखी के पापा और मम्मी 8 बजे ही दिहाड़ी पर जा चुके थे। राखी का छोटा भाई चारपाई पर लेटा रो रहा था शायद दोनों ही बच्चों ने सुबह से कुछ खाना नहीं था। मेरी आशंका सच साबित हुई। राखी अपने छोटे छोटे हाथों से आटा सान रही थी। चूल्हे पर एक कढ़ाई रखी थी जिसमें सोयाबीन आलू की रात की सब्जी गर्म हो रही थी और पूरी रसोई धुँए से भरी हुई थी। पास ही राखी पटरी पर मैं भी बैठ गया। मैंने राखी से कहा क्या मुझे भी चूल्हे की रोटी खिलाओगी? क्यों ना सर जी आप भी खा लो, राखी ने हल्की सी मुस्कान चेहरे पर लिये जवाब दिया। अपने भीतर की भावुकता को नियंत्रित कर मैंने राखी को स्कूल चलने के लिये कहा। उसका जवाब था की सर जी आप भैया को तो बैठने नहीं देते इसको कहाँ छोड़कर जाऊँ? सवाल बड़ा था और शायद फिलहाल समाधान भी मेरे पास ही था। एक तरफ कक्षा का अनुशासन और दूसरी तरफ राखी का स्कूल आना। उसके घर की परिस्थिति को देखते होते मैंने दूसरा विकल्प मन ही मन चुन लिया था। मनः स्थिति से बाहर आते हुए मैंने राखी से स्कूल चलने को कहा साथ ही यह भी आश्वासन दिया की रजत को भी वह साथ रख ले जा सकेगी। नियमों के तराजू में चीजों को तौलकर हम हकीकत से बहुत दूर चले जाते हैं। उम्र के हिसाब से बच्चों को कक्षा का संवतारा एक सैद्धांतिक व्यवस्था हो सकती है पर व्यवहार में राखी जैसे बच्चों की समस्या से हर स्कूल दो चार है। राखी को उसके भाई के साथ स्कूल ले आया हूँ। रजत को कक्षा एक के बच्चों के साथ बैठाने के प्रयास जारी हैं पर दोनों एक दूसरे को नज़रों के सामने रहना चाहते हैं। आखिर कब तक परिस्थितियों के मद्देनजर सैकड़ों राखियाँ अपने सपनों को बिखरता देखती रहेंगी? यह हमारे सभ्य समाज की बर्बर सच्चाई है जिसमें बचपन पल पल मरता है। रजत मेरे टिफिन में रखे फ्रूट्स खा रहा है और राखी हिंदी का छुटा हुआ अपना काम पूरा कर रही है।

## ओले क्रिस्टेंसन रोमर (1644-1710) प्रकाश की गति मापने वाले वैज्ञानिक

(जन्मतिथि 25, सितम्बर पर विशेष)

ओले क्रिस्टेंसन रोमर एक व्यापारी के बेटे थे, जिनका जन्म 25 सितंबर, 1644 को आरहूस, डेनमार्क में हुआ था। उन्होंने अपनी युवावस्था में आरहूस कैथेड्रल स्कूल में पढ़ाई की और 1662 में स्नातक होने के बाद उन्हें कोपेनहेगन विश्वविद्यालय भेजा गया। वहाँ उन्होंने मेडिसिन के प्रोफेसर इरास्मस बार्थोलिन के साथ रहकर अध्ययन किया, जो आइसलैंड स्पेर में दोहरे अपवर्तन की खोज के लिए जाने जाते हैं। बार्थोलिन ने रोमर का बहुत सम्मान किया और उसे टाइको ब्राहे की पांडुलिपियों के संपादन का काम सौंपा। रोमर ने 1664 से 1670 तक इस परियोजना को जारी रखा और 1671 में ब्राहे की वेधशाला का निरीक्षण करने के लिए बार्थोलिन और जीन पिकार्ड के साथ स्वर्ग की यात्रा की।

1672 में, रोमर पिकार्ड के साथ फ्रांस लौट आए और पेरिस में रॉयल वेधशाला में काम करना शुरू किया। इसके तुरंत बाद, उन्हें राजा लुईस XIV द्वारा डॉफिन में खगोल विज्ञान का शिक्षक नियुक्त किया गया, लेकिन उन्होंने फ्रेंच एकेडमी ऑफ साइंसेज के तत्वावधान में वेधशाला में शोध जारी रखा। वहाँ रहते हुए, प्रकाश पर शोध किया वह अपने यांत्रिक कौशल और नवीन दिमाग के लिए सम्मानित हो गए। उन्होंने कई प्लैनिस्पेयर, एक सैटर्नलैबियम, एक जीविलैबियम और एक बेहतर माइक्रोमीटर का उत्पादन किया, जिन्हें तुरंत सामान्य उपयोग के लिए अपनाया गया। 1679 में, उन्हें रॉयल सोसाइटी द्वारा निर्मित पेंडुलम की मापने की क्षमताओं का परीक्षण करने के लिए इंग्लैंड भेजा गया था और उन्होंने उस समय के कई प्रमुख वैज्ञानिक दिमागों से मुलाकात की, जिनमें सर आइजैक न्यूटन, जॉन फ्लेमस्टीड और एडमंड हैली शामिल थे। पृथ्वी के बृहस्पति के करीब आने पर आयो के लगातार ग्रहणों के बीच बीता समय कम होता जाता है और पृथ्वी तथा बृहस्पति के दूर होते जाने पर लंबा होता जाता है। कैसिनी ने इस पर विचार किया था, लेकिन फिर इस विचार को खारिज कर दिया कि यह प्रकाश के लिए एक सीमित प्रसार गति के कारण हो सकता है। 1676 में, रोमर ने घोषणा की कि 9 नवंबर को होने वाला आयो का ग्रहण उसी उपग्रह के पिछले ग्रहणों के आधार पर निकाले गए समय से 10 मिनट बाद होगा। जब घटनाएँ उनके पूर्वानुमान के अनुसार घटित हुईं, तो रोमर ने समझाया कि प्रकाश की गति इतनी है कि प्रकाश को पृथ्वी की कक्षा के व्यास को पार करने में 22 मिनट लगते हैं। (सत्रह मिनट अधिक सटीक होगा।) डच गणितज्ञ क्रिस्टियान ह्यूजेस ने अपने ट्रेटे डे ला लुमियर (1690); प्रकाश पर ग्रंथ) में, रोमर के विचारों का उपयोग प्रकाश की गति के लिए एक वास्तविक संख्यात्मक मान देने के लिए किया, जो आज स्वीकार किए गए मान के काफी करीब था - हालाँकि समय की देरी के अधिक अनुमान और पृथ्वी की कक्षा के व्यास के लिए तत्कालीन स्वीकृत आंकड़े में कुछ त्रुटि के कारण यह कुछ हद तक गलत था।

1679 में रोमर इंग्लैंड के एक वैज्ञानिक मिशन पर गए, जहाँ उनकी मुलाकात सर आइजैक न्यूटन और खगोलविदों जॉन फ्लेमस्टीड और एडमंड हैली से हुई। 1681 में डेनमार्क लौटने पर, उन्हें कोपेनहेगन विश्वविद्यालय में शाही गणितज्ञ और खगोल विज्ञान का प्रोफेसर नियुक्त किया गया। विश्वविद्यालय की वेधशाला में उन्होंने ऊंचाई और अजीमुथ सर्कल के साथ एक उपकरण और एक दूरबीन स्थापित की, जो आकाशीय पिंडों की स्थिति को सटीक रूप से मापती थी। उन्होंने 1705 में कोपेनहेगन के मेयर सहित कई सार्वजनिक कार्यालयों को भी संभाला। हालाँकि, रोमर की सबसे बड़ी उपलब्धि प्रकाश की गति का पहला अपेक्षाकृत सटीक माप था, यह उपलब्धि

उन्होंने 1676 में हासिल की थी। रॉयल ऑब्जर्वेटरी में, रोमर के बृहस्पति के चंद्रमा और उसके बार-बार होने वाले ग्रहणों के अध्ययन ने उन्हें आवधिकता की भविष्यवाणी करने में सक्षम बनाया। चंद्रमा के लिए ग्रहण काल की खोज में सफलता



हासिल की हालाँकि, कई महीनों के बाद, उन्होंने देखा कि उनकी भविष्यवाणियों धीरे-धीरे लंबे समय के अंतराल में कम सटीक होती जा रही थीं, जिसकी परिणति लगभग 22 मिनट की अधिकतम त्रुटि के रूप में हुई। फिर, अजीब तरह से, कई महीनों के दौरान उनकी भविष्यवाणियाँ फिर से अधिक सटीक हो जाती हैं, पृथ्वी एक चक्र जो लगातार खुद को दोहराता है। रोमर को जल्द ही एहसास हुआ कि देखी गई विषमता ग्रहों की कक्षीय गति के कारण पृथ्वी और बृहस्पति के बीच की दूरी में भिन्नता के कारण हुई थी। जैसे ही बृहस्पति पृथ्वी से दूर चला गया, प्रकाश को यात्रा करने के लिए लंबी दूरी तय करनी पड़ी और इसलिए पृथ्वी तक पहुँचने में अतिरिक्त समय लगा। सत्रहवीं शताब्दी में उपलब्ध पृथ्वी और बृहस्पति के बीच की दूरी के लिए अपेक्षाकृत गलत गणनाओं को बदला, जो 137,000 मील (या 220,000 किलोमीटर) प्रति सेकंड पर प्रकाश की गति का अनुमान लगाने में सक्षम था।

प्रकाश की गति का सटीक माप - ओले रोमर के 1676 के सफल प्रयास से 100 से अधिक जांचकर्ताओं ने विभिन्न तकनीकों का उपयोग करके कम से कम 163 बार प्रकाश की गति को मापा है। अंततः 1983 में, पहले गंभीर माप प्रयास के 300 से अधिक वर्षों के बाद, वजन और माप पर सत्रहवीं जनरल कांग्रेस द्वारा प्रकाश की गति को 299,792,458 किलोमीटर प्रति सेकंड के रूप में परिभाषित किया गया था। इस प्रकार, मीटर को उस दूरी के रूप में परिभाषित किया जाता है जो प्रकाश 1/299,792,458 सेकंड के अंतराल पर निर्वात के माध्यम से यात्रा करता है। हालाँकि, सामान्य तौर पर, (कई वैज्ञानिक गणनाओं में भी) प्रकाश की गति लगभग 300,000 किलोमीटर (या 186,000 मील) प्रति सेकंड है। इस समय तक, वैज्ञानिकों ने मान लिया था कि प्रकाश की गति या तो मापने के लिए बहुत तेज़ है या अनंत है। फ्रांसीसी दार्शनिक डेसकार्टेस द्वारा जोरदार तरीके से तर्क दिया गया प्रमुख दृष्टिकोण अनंत गति का पक्षधर था। पेरिस वेधशाला में काम करने वाले रोमर ने जब प्रकाश की गति पाई, तब वे इसकी तलाश नहीं कर रहे थे। इसके बजाय, वे 1610 में गैलीलियो द्वारा खोजे गए बृहस्पति के चार बड़े उपग्रहों में से सबसे भीतरी, आयो की कक्षा के व्यापक अवलोकनों को संकलित कर रहे थे। बृहस्पति द्वारा आयो के ग्रहणों का समय निर्धारित करके, रोमर उपग्रह की परिक्रमा अवधि के लिए अधिक सटीक मान निर्धारित करने की आशा कर रहे थे। सत्रहवीं शताब्दी में ऐसे अवलोकनों का व्यावहारिक महत्व था।

गैलीलियो ने स्वयं सुझाव दिया था कि बृहस्पति के उपग्रहों की कक्षीय गति की तालिकाएँ आकाश में एक प्रकार की घड़ी प्रदान करेंगी। दुनिया में कहीं भी नेविगेटर और मानचित्रकार इस घड़ी का उपयोग निरपेक्ष समय (पेरिस वेधशाला जैसे ज्ञात देशांतर के स्थान पर मानक समय) को पढ़ने के लिए कर सकते हैं। फिर, स्थानीय सौर समय का निर्धारण करके, वे समय के अंतर से अपने देशांतर की गणना कर सकते हैं। देशांतर खोजने की यह विधि अंततः अव्यावहारिक साबित हुई और सटीक समुद्री घड़ियों के विकास के बाद इसे छोड़ दिया गया। लेकिन आयो ग्रहण के आंकड़ों ने अप्रत्याशित रूप से एक और महत्वपूर्ण वैज्ञानिक समस्या हल कर दी - प्रकाश की गति। आयो की परिक्रमा अवधि अब 1.769 पृथ्वी दिवस के रूप में जानी जाती है। पृथ्वी से देखने पर उपग्रह बृहस्पति द्वारा हर परिक्रमा में एक बार ग्रहण किया जाता है। कई वर्षों में इन ग्रहणों का समय निर्धारित करके, रोमर ने कुछ अनोखी बात देखी। जैसे-जैसे पृथ्वी अपनी कक्षा में बृहस्पति की ओर बढ़ती गई, लगातार ग्रहणों के बीच का समय अंतराल लगातार कम होता गया और जैसे-जैसे पृथ्वी बृहस्पति से दूर होती गई, लगातार लंबा होता गया। ये अंतर जमा होते गए। अपने डेटा से, रोमर ने अनुमान लगाया कि जब पृथ्वी बृहस्पति के सबसे निकट थी, तो आयो के ग्रहण कई वर्षों की औसत परिक्रमा अवधि के आधार पर पूर्वानुमान से लगभग ग्यारह मिनट पहले होंगे। और 6.5 महीने बाद, जब पृथ्वी बृहस्पति से सबसे दूर थी, तो ग्रहण पूर्वानुमान से लगभग ग्यारह मिनट बाद होंगे। रोमर को पता था कि आयो की वास्तविक परिक्रमा अवधि का पृथ्वी और बृहस्पति की सापेक्ष स्थिति से कोई लेना-देना नहीं हो सकता। एक शानदार अंतर्दृष्टि में, उन्होंने महसूस किया कि समय का अंतर प्रकाश की सीमित गति के कारण होना चाहिए। यानी, बृहस्पति प्रणाली से प्रकाश को पृथ्वी तक पहुँचने के लिए तब अधिक दूरी तय करनी पड़ती है जब दोनों ग्रह सूर्य के विपरीत दिशा में होते हैं, न कि जब वे एक-दूसरे के करीब होते हैं। रोमर ने अनुमान लगाया कि पृथ्वी की कक्षा के व्यास को पार करने के लिए प्रकाश को बाईस मिनट की आवश्यकता होती है। फिर पृथ्वी की कक्षा के व्यास को समय के अंतर से विभाजित करके प्रकाश की गति पाई जा सकती है। डच वैज्ञानिक क्रिस्टियान ह्यूजेस, जिन्होंने सबसे पहले अंकगणित किया था, ने प्रकाश की गति के लिए 131,000 मील प्रति सेकंड के बराबर का मान पाया। सही मान 186,000 मील प्रति सेकंड है। अंतर रोमर के अधिकतम समय विलंब के अनुमान में त्रुटियों के कारण था (सही मान 16.7 है, 22 मिनट नहीं), और पृथ्वी के कक्षीय व्यास के बारे में गलत जानकारी के कारण भी। हालाँकि, सटीक उत्तर से ज़्यादा महत्वपूर्ण यह तथ्य था कि रोमर के डेटा ने प्रकाश की गति के लिए पहला मात्रात्मक अनुमान प्रदान किया, और यह सही अनुमान था। रोमर 1681 में डेनमार्क लौट आए, जहाँ उन्होंने विज्ञान और सरकार दोनों में एक प्रतिष्ठित करियर बनाया। उन्होंने अपने समय के सबसे सटीक खगोलीय उपकरणों को डिजाइन और निर्मित किया और व्यापक अवलोकन किए। बाद में उन्होंने कोपेनहेगन के मेयर और पुलिस के प्रीफेक्ट के रूप में और अंततः राज्य परिषद के प्रमुख के रूप में कार्य किया। रोमर की मृत्यु 23 सितम्बर 1710, कोपेनहेगन में हुई। वो एक डेनिश खगोलशास्त्री थे जिन्होंने निर्णायक रूप से प्रदर्शित किया कि प्रकाश एक परिमित गति से यात्रा करता है। रोमर को आज बेशक उनके उच्च राजनीतिक पद के लिए नहीं बल्कि प्रकाश की गति को मापने वाले पहले व्यक्ति होने के लिए याद किया जाता है।

# ऑक्सीजन संकट से बचाने को युवा पीढ़ी आगे आए: बघेल

## ओलिविया इंटरनेशनल स्कूल में हरेला संगोष्ठी का आयोजन

हरिद्वार (शिक्षा का अधिकार)। ट्री ट्रस्ट ऑफ इंडिया द्वारा संचालित हरेला अभियान की नियमित श्रृंखला में ओलिविया इंटरनेशनल स्कूल के प्रबंधकगण उमेश राणा, तरुण राठी, अनमोल, राहुल तथा प्रधानाचार्य कुरियन एंटीनी के साथ समस्त स्टाफ के सहयोग से हरेला संगोष्ठी का आयोजित किया गया। जिसमें मुख्यवका

के रूप में भारतीय वृक्ष न्यास के अध्यक्ष हरितऋषि विजयपाल बघेल (ग्रीनमैन ऑफ इंडिया) द्वारा विद्यार्थियों को पर्यावरण संरक्षण के लिए छोटे छोटे प्रयास करने का मंत्र दिया।

उन्होंने कहा कि प्रकृति की सुरक्षा में युवावर्ग की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है क्योंकि चारों तरफ प्रदूषण रूपी राक्षस



का प्रकोप फैल रहा है, न सांस लेने के लिए शुद्ध ऑक्सीजन मिल पा रही है और न ही पीने के लिए स्वच्छ पानी। प्राकृतिक संरचना में बढ़ते मानवीय हस्तक्षेप से बढ़ते जा रहे जलवायु परिवर्तन के कारण

मौसमचक्र बिगड़ गया है। ग्रीनमैन ने बच्चों को सचेत करते हुए कहा कि जिस तरह वो आज अपने साथ पानी की बोतल साथ में रखना मजबूरी समझ रहे हैं वैसे अगली पीढ़ी यानी उनके बच्चों के सामने तो

ऑक्सीजन का संकट बढ़ेगा और अपने साथ ऑक्सीजन सिलेंडर जरूरी हो जायेगा। बघेल ने ग्लोबल वार्मिंग की विश्वव्यापी समस्या के निदान के लिए सबसे सरल तरीका पौधारोपण और वृक्ष संरक्षण पर

सभी का ध्यान केंद्रित करने का आह्वान किया।

हरेला अभियान के जिला संयोजक प्रमोद शर्मा ने बताया कि भारतीय वृक्ष न्यास ने इस अभियान में 340 कार्यक्रम आयोजित किए जो विद्यालयों, आश्रमों, मठों, औद्योगिक संस्थानों, सामाजिक संगठनों, व्यापार मंडल, शिक्षण संस्थानों, कार्यालयों आदि के परिसरों में संपन्न हुए। भारतीय वृक्ष न्यास के हरिद्वार जिला प्रभारी विनोद मिश्र ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

संगोष्ठी की अध्यक्षता प्रिंसिपल कुरियन एंटीनी तथा संचालन अध्यापिका अनुपमा ने किया। हरेला संगोष्ठी की शुरुआत पौधारोपण करके हुई तथा हरेला अभियान में ओलीविया इंटरनेशनल स्कूल द्वारा विशेष योगदान दिए जाने पर हरेला चैंपियन के रूप में सम्मानित किया गया। स्वच्छता अभियान में भी ओलीविया इंटरनेशनल

स्कूल बढ़चढ़ कर हिस्सा लेता है, इस अवसर पर नगर निगम हरिद्वार के ब्रांड एंबेसडर ग्रीनमैन विजयपाल बघेल ने विद्यालय में तीन बायो कंपोस्टर लगाए जो विद्यालय के सारे जैविक कचरे का खाद बनाएंगे। ओलीविया इंटरनेशनल स्कूल हरिद्वार का पहला ऐसा स्कूल बना जहां बायो कंपोस्टर लगाया गया है।

कार्यक्रम में शामिल होने वालों में प्रमुख रूप से नीति सक्सेना, मोहित नेगी, दीक्षा तोमर, सरिता गोदियाल, लावण्य शर्मा, नेहा रानी, रुचि चौधरी, मोनिमा चौधरी, सुरभि, सागर सैनी, नेहा रावत, ऋचा शर्मा, अनुपमा, ममता पांडे, रुचि गर्ग, अंकिता गुप्ता, तपस्या तनेजा, ममता शर्मा, राखी पवार, पूजा अग्रवाल, शिवांगी जोशी, कुहू, नमिता परमार, रेखा नेगी, जूली त्यागी, मोनिका डांडरियाल, नेहा शर्मा, निशु सैनी, सारिका, विभा गोयल तथा सुनीता आदि का सहयोग सराहनीय रहा।

# रा0 मॉडल महाविद्यालय में जनजागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

श्यामपुर (शिक्षा का अधिकार)। राजकीय मॉडल महाविद्यालय मीठीबेरी में देवभूमि उद्यमिता योजना के अंतर्गत एक दिवसीय जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

मंगलवार को आयोजित इस कार्यक्रम का शुभारंभ महाविद्यालय की प्राचार्य प्रोफेसर डॉ0 अर्चना गौतम और मुख्य अतिथि, भारतीय स्टेट बैंक, लालढांग के शाखा प्रबंधक नीरज कुमार ने माँ सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलित कर के किया। कार्यक्रम में नोडल अधिकारी डॉ. कुलदीप चौधरी ने देवभूमि उद्यमिता योजना के उद्देश्यों और स्वरोजगार की संभावनाओं पर विस्तार से जानकारी दी।

डॉ. चौधरी ने कहा कि राज्य में स्वरोजगार के अवसरों को बढ़ावा देकर राज्य से लगातार हो रहे युवाओं के पलायन को रोका जा सकता है। उन्होंने बताया कि केंद्र और राज्य सरकारें युवाओं में उद्यमिता को प्रोत्साहित करने के लिए कई योजनाएँ चला रही हैं, जिससे पहाड़ी क्षेत्रों के युवा आत्मनिर्भर बन सकें। मुख्य अतिथि नीरज कुमार ने छात्रों को बैंकिंग सुविधाओं और



स्वरोजगार के लिए ऋण प्राप्त करने के तरीकों की जानकारी दी। उन्होंने छात्रों को बताया

कि वह किस प्रकार बैंक से सहयोग लेकर वे अपने स्वयं के व्यवसाय शुरू कर सकते

हैं। कार्यक्रम में प्राचार्य प्रोफेसर डॉ0 अर्चना गौतम ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा

कि सभी छात्र-छात्राएँ मेहनत और लगन से स्वरोजगार के माध्यम से आत्मनिर्भर बन सकते हैं। उन्होंने समस्त छात्र-छात्राओं से आह्वान किया कि वे उद्यमिता योजना के तहत आने वाले अवसरों का भरपूर लाभ उठाएँ और अपने भविष्य को सुदृढ़ करें।

इस अवसर पर बी.ए. तृतीय सेमेस्टर की छात्रा कु0 कशिश को स्वरोजगार स्थापित करने के लिए सम्मानित भी किया गया, जिससे कार्यक्रम और भी प्रेरणादायक बन गया। कार्यक्रम के अंत में डॉ. कुलदीप चौधरी ने सभी अतिथियों और उपस्थित प्राध्यापकों एवं छात्र-छात्राओं का धन्यवाद ज्ञापित किया।

इस अवसर पर प्रमुख रूप से डॉ. सुनील कुमार, डॉ. अरविंद वर्मा, डॉ. सुमन पांडे, आशुतोष कुमार, और डॉ. देशराज सिंह के अतिरिक्त स्टाफ कर्मचारी शशिधर उनियाल, पूनम, कुलदीप, सूरज आदि सहित संगीता, साक्षी, मंजिली, प्रियंका, शुभांगी, अंकिता, ईशा, अंकिता, रेणुका, शीतल, सोनम, अमन, प्रिया, मंजीता, रेनु, विधिता, गुलफाम, दिव्या, संध्या आदि छात्र-छात्राएँ उपस्थित रहे।

## यातायात पुलिस ने छात्र-छात्राओं को दी सड़क सुरक्षा संबंधी जानकारी

टिहरी। निदेशक यातायात उत्तराखण्ड के निदेशानुसार, श्रीमान वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक टिहरी गढ़वाल, अपर पुलिस अधीक्षक व क्षेत्राधिकारी यातायात के पर्यवेक्षण में यातायात जागरूकता अभियान चलाए जाने के क्रम में पूर्व की भांति आज टीएसआई सुभाष चंद्र द्वारा सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज पुरानी टिहरी रोड चंबा (टिहरी गढ़वाल) में जाकर 175 एवं छात्राओं एवं अध्यापक गणों को यातायात के नियमों का पालन करने एवं सड़क सुरक्षा के संबंध में विशेष रूप से जानकारी दी गई तथा यातायात नियमों का पालन करने एवं सड़क दुर्घटनाओं की रोकथाम में आम नागरिक की भूमिका के संबंध में जानकारी

दी गई, साथ ही यह भी कहा गया कि चालान के डर से नियमों का पालन न करें बल्कि अपनी सुरक्षा तथा अन्य लोगों की सुरक्षा के



लिए यातायात नियमों का पालन करें। इस अवसर पर 175 छात्र छात्राएँ एवं अध्यापक गण एवं कांस्टेबल टीपी जयनारायण चालक 112 चंबा भारत असवाल एवं अन्य स्टाफ मौजूद रहे।

## एसएमजेएन पीजी कॉलेज एवं राजकीय महाविद्यालय भूपतवाला के मध्य हुआ एमओयू

हरिद्वार (शिक्षा का अधिकार)। एसएमजेएन पीजी कॉलेज एवं राजकीय महाविद्यालय भूपतवाला के मध्य उच्च शिक्षा तथा सामाजिक सरोकार से जुड़े

कॉलेज के प्राचार्य, प्रो सुनील बत्रा ने बताया कि यह समझौता विशेषतः विद्यार्थियों के हितों को ध्यान में रखकर किया गया है। अब इसके माध्यम से

पाएंगे। प्रो. बत्रा ने बताया कि इस एमओयू से पर्यावरण संरक्षण तथा सामाजिक सरोकार के क्षेत्र में किए जा रहे कार्यों को भी गति प्राप्त हो सकेगी।

विभिन्न मुद्दों पर एक लिखित समझौता एमओयू हुआ। इस अवसर पर श्रीमहंत रविंद्र पुरी महाराज, अध्यक्ष, कॉलेज प्रबंध समिति, एसएमजेएन कॉलेज ने दोनों संस्थाओं को बधाई देते हुए कहा कि इस एमओयू से शोध, परामर्श एवं ज्ञान के क्षेत्र में, पर्यावरण संरक्षण, खेलकूद, तथा सामाजिक कार्यों में बल मिलेगा। उन्होंने कहा कि उच्च शिक्षा के क्षेत्र में बड़े लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु इस तरह के एम ओ यू निश्चित रूप से सहायक होंगे।

विद्यार्थियों को न केवल प्रयोगशालाओं का लाभ मिल सकेगा अपितु ज्ञान और परामर्श के भी अधिक अवसर तथा स्रोत मिल

इस अवसर पर राजकीय महाविद्यालय भूपतवाला के प्राचार्य डॉ संजीव मेहरोत्रा ने बताया कि दोनों संस्थाओं के बीच में हुए इस लिखित समझौते से विद्यार्थियों को शिक्षा के लिए और अधिक संसाधन प्राप्त होंगे तथा शिक्षकों को भी संस्थाओं के माध्यम से अनेकों अवसर मिल पाएंगे। इस अवसर पर राजकीय महाविद्यालय भूपतवाला के डॉ युवराज सिंह ने एम ओ यू पर हस्ताक्षर होने पर दोनों प्राचार्यों का धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर डॉ सकुंज राजपूत तथा आदित्य गौड़ भी उपस्थित रहे।



## शिक्षण में ही हर समस्या का समाधान: डॉ. सप्रे



**हरिद्वार (शिक्षा का अधिकार)।** एसएमजेएन पीजी कॉलेज में एनआईटी भोपाल से सेवानिवृत्त निदेशक एवं समाजसेवी प्रोफेसर डॉ. सदानंद दामोदर सप्रे ने शिक्षकों से संवाद स्थापित किया। उन्होंने कहा कि शिक्षण में ही हर समस्या का समाधान है। शिक्षा, चिकित्सा और अच्छे उद्देश्य को लेकर जो कला प्रस्तुत हो रही है उसे समाज में आदर सम्मान प्राप्त हो रहा है। मैं और मेरा परिवार से आगे बढ़कर अच्छे शिक्षण का लाभ वसुधैव कुटुम्बकम् के आधार पर मिलना चाहिए। शिक्षकों को युवा वर्ग को ध्यान में रखकर शोध कार्य करना चाहिए। उन्होंने कहा कि इतिहास की सही जानकारी युवा पीढ़ी तक पहुंचाने का कार्य शिक्षक ही कर सकते हैं। हर मुद्दा सरकारी स्तर पर क्रियान्वित नहीं हो सकता उसमें समाज की भागीदारी आवश्यक है। भारतीय छात्र-छात्राएँ इतिहास की सही जानकारी से अनभिज्ञ हैं। पिछले 1000 वर्षों को हम गुलामी का काल मानते हैं जबकि ये संघर्ष

और वीरता का काल था। चोल, चालुक्य, अहोम वंश आदि कई स्वतंत्र राजवंश इस समय रहे, जिन्होंने पूर्व के अनेक देशों में राज्य स्थापित किया, वहां इनकी छवि उदार शासकों के रूप में है। श्री सप्रे ने कहा कि विदेशों में हिन्दुओं के प्रति आदर का भाव है जिसका अनुभव मैंने अपनी विदेश यात्राओं में किया। प्रो सप्रे ने बातचीत के दौरान बताया कि पाठ्य पुस्तकों में भारतीय विद्वान और वैज्ञानिकों के योगदान को उनकी अपेक्षा के अनुरूप स्थान नहीं मिला है। न्यूटन लॉ का नाम भास्कराचार्य होना चाहिए। भारतीय ज्ञान की विशेषता से तो अमेरिका जैसा देश भी प्रभावित है तभी तो विमान विद्या के लिये वो भारद्वाज संहिता की सहायता लेता है। अमेरिका ने अपनी कई सेटलाइट भारत में लांच की है, जिसका कारण यहाँ की तकनीकी गुणवत्ता है। शिक्षकों को भारतीय ज्ञान परम्परा से सम्बंधित पुस्तकों का अध्ययन एवं अध्यापन का कार्य करना चाहिए। इसमें सबसे आवश्यक बात है कि

कोई भी जानकारी प्रमाण के आधार पर ही प्रेषित की जानी चाहिए। प्राचीनकाल से लेकर आधुनिक काल तक की जानकारी का प्रसार होना चाहिए शिक्षक की जिम्मेदारी है कि वह भारतीय ज्ञान परम्परा का विस्तार पूरे विश्व में फैलाये। उन्होंने नई शिक्षा नीति पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि यह कौशल विकास के साथ साथ युवा वर्ग में भारतीयता एवं भारतीय संस्कृति का भी समवर्धन करेगी। इस अवसर पर प्रोफेसर डॉक्टर सदानंद दामोदर सप्रे को अंगवस्त्र एवं स्मृति चिन्ह देकर कॉलेज के प्राचार्य प्रोफेसर डॉक्टर सुनील बत्रा ने सम्मान किया। डॉ सप्रे के साथ वार्तालाप में डॉ लता शर्मा, डॉ आशा शर्मा, डॉ मोना शर्मा, डॉ पूर्णिमा सुंदरियाल, डॉ पद्मावती तनेजा, डॉ पुनीता शर्मा, डॉ मीनाक्षी शर्मा, रिकल गोयल, रिचा मिनोचा, डॉ यादवेंद्र, अकित बंसल, विनित सक्सेना, डॉ रजनी सिंघल आदि ने भाग लिया।

## शिक्षक और छात्र शुरु कर सकेंगे स्टार्टअप



**देहरादून (शिक्षा का अधिकार)।** श्री गुरु राम राय विश्वविद्यालय के मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय और खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग उत्तराखंड द्वारा संयुक्त रूप से उद्यमिता जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया। जिसमें छात्र-छात्राओं को उद्यमिता अपनाने संबंधी विभिन्न योजनाओं के बारे में जानकारी दी गई। इस अवसर पर खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग की ओर से सफल उद्यमियों की एक फिल्म भी छात्रों को दिखाई गई। कार्यक्रम की सफलता के लिए विश्वविद्यालय के प्रेजिडेंट श्रीमहंत देवेन्द्र दास जी महाराज ने अपनी शुभकामनाएं प्रेषित की। श्री गुरु राम राय विश्वविद्यालय के इनोवेशन एवं इनक्यूबेशन सेंटर (आईआईसी) के निदेशक प्रो. द्वारिका प्रसाद मैठाणी ने जानकारी देते हुए बताया कि इनक्यूबेशन सेंटर विश्वविद्यालय में शिक्षकों एवं छात्रों में उद्यमिता विकास हेतु सहयोग कर रहा है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. यशवीर दीवान और कुलसचिव

डॉ. अजय कुमार खंडूरी का हर तरह से आगे बढ़ने के कार्यक्रमों में समर्थन रहता है। विश्वविद्यालय के शिक्षक और छात्र मिलकर कोई भी स्टार्टअप शुरू कर सकते हैं। इसके लिए पालिसी बन गई है। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय में 10 इंटरप्रिनोर एमएसएमई के तहत रजिस्टर हुए हैं एवं 5 छात्रों को यंग साइंटिस्ट अवार्ड मिले हैं। यही नहीं स्टार्टअप एवं आईपीआर के तहत आईआईसी काफी कार्य कर रहा है। अब तक विश्वविद्यालय में दो साल के अंदर 19 कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं। मुख्य वक्ता के रूप में पहुंचे खादी और ग्रामोद्योग आयोग उत्तराखण्ड के निदेशक डॉ. संजीव राय ने बताया कि आयोग युवाओं को विभिन्न योजनाओं के तहत प्रशिक्षण दे रहा है। इसमें कई तरह की सब्सिडियां भी हैं। इसमें खादी विकास योजना, ग्रामोद्योग विकास योजना एवं अन्य योजनाओं के तहत कई कार्यक्रम शामिल हैं। विश्वविद्यालय के शिक्षक भी कई योजनाओं के तहत प्रोजेक्ट के लिए अप्लाई कर सकते हैं। उन्होंने उद्यमियों के विकास के लिए उपलब्ध ऋण सुविधाओं और आवेदन की प्रक्रिया एवं आवश्यक दस्तावेजों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय की डीन प्रो गीता रावत ने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि ग्राम उद्योग एवं कुटीर उद्योग इस देश की आर्थिक प्रक्रियाओं की एक मजबूत आधार शिला रही हैं। खादी और ग्रामोद्योग आयोग के सहयोग से छात्र कई प्रकार के रोजगार शुरू कर सकते हैं। विश्वविद्यालय हर स्तर पर छात्रों को सहयोग कर रहा है। बीरेडी हार्वेस्टिंग के फाउंडर शुभम राणा ने अपनी सफलता की कहानी से छात्रों को प्रेरित करते हुए कहा कि मधुमक्खी पालन में बहुत अधिक अवसर छिपे हुए हैं छात्र घर में ना बैठकर इस प्रकार के व्यवसाय करके अपनी आजीविका चला सकते हैं। कार्यक्रम की समन्वयक प्रोफेसर पूजा जैन रहीं, कार्यक्रम में छात्रों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति भी दी गई। मौके पर प्रो. आशीष कुलश्रेष्ठ, प्रो. प्रीति तिवारी, डॉ प्रिया पांडे, डॉ. अनुजा रोहिह्ला, डॉ गरिमा सिंह, डॉ. गरिमा डिमरी, डॉ. सुनील किस्टवाल, डॉ. अमरलता डॉ. कल्पना थपलियाल, डॉ. मनवीर सिंह नेगी, डॉ. अमरजित चौहान, डॉ. गरिमा सिंह, डॉ. एमजीआग्रवाल, मनोज जगूडी, मनीष, अंजली आदि शिक्षक उपस्थित रहे।

## कृत्रिम बुद्धि का शैक्षणिक शोध में योगदान विषय पर सम्मेलन आयोजित देश दुनिया की प्रगति में आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस सबसे प्रगतिशील टूल

**देहरादून (शिक्षा का अधिकार)।** श्री गुरु राम राय विश्वविद्यालय (एसजीआरआरयू) के कॉलेज ऑफ नर्सिंग की ओर से दो दिवसीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। कृत्रिम बुद्धि का शैक्षणिक शोध में योगदान विषय पर आयोजित सम्मेलन में विषय विशेषज्ञों ने महत्वपूर्ण जानकारी साझा की। सम्मेलन का उद्देश्य आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस का उपयोग का शैक्षणिक शोध में योगदान की उपयोगिता को प्रकाशित एवम अन्वेषित करना रहा। एसजीआरआरयू कॉलेज ऑफ नर्सिंग एवम् ड्रीम्स यूनिवर्सिटी स्कूल ऑफ नर्सिंग, कटक, उड़ीसा के बीच एमओयू साइन हुआ।



एमओयू के अन्तर्गत छात्र-छात्राओं को एक दूसरे के संस्थानों में शैक्षणिक शोध, स्टूडेंट एवम् फेकल्टी एक्सचेंज प्रोग्राम का लाभ मिलेगा। मंगलवार को श्री गुरु राम राय इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल एण्ड हेल्थ साइंसेज के सभागार में सम्मेलन के पहले दिन का शुभारंभ मुख्य अतिथि डॉ पंकज मिश्रा, विशिष्ट अतिथि डॉ आर.पी.सिंह, नर्सिंग कॉलेज की डीन डॉ जी. रामालक्ष्मी ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया। नर्सिंग छात्र-छात्राओं ने सरस्वती वंदना के साथ कार्यक्रम का आगाज किया। डॉ जी. रामालक्ष्मी ने स्वागत भाषण पढ़ा। उन्होंने कृत्रिम बुद्धि का शैक्षणिक शोध में योगदान विषय को रेखांकित करते हुए महत्वपूर्ण जानकारी साझा की। नूनन कॉलेज ऑफ नर्सिंग, विषनगर गुजरात के प्राचार्य एप्लीकेशन ऑफ आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस इन एकेडमिक रिसर्च विषय पर जानकारी दी। उन्होंने कहा कि जॉन मैकथी ने पहली बार 1956 में आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस का उपयोग किया था। आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस आज के समय की मांग है। छात्र-छात्राओं को आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस के लिए मानसिक रूप से सजुद बनाए जाने की आवश्यकता है।

आवश्यकता के अनुसार इन टूल्स का इस्तेमाल किया जाता है। कॉलेज ऑफ नर्सिंग, ऋषिकेश की विषय विशेषज्ञ टी. कान्नालक्ष्मी ने आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस के वैज्ञानिक और व्यावहारिक पक्ष का तुलनात्मक अध्ययन समझाया। उन्होंने रिसर्च रैबिट, कनेक्टेड पेपर्स के बारे में जानकारी दी। उन्होंने एम

आई की तीव्र प्रगति के बारे में कई लोग बेहद निराशावादी हैं। ऐसे लोगों को दुनिया में हो रही तेज प्रगति को देखना समझना होगा। आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस की उपयोगिता और महत्व को आत्मसात करना होगा। ड्रीम्स यूनिवर्सिटी स्कूल ऑफ नर्सिंग, उड़ीसा के प्रोफेसर सतीश राजामनी ने आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस के शैक्षणिक शोध में चुनौतियां एवम् नैतिक विचार विषय पर जानकारी दी। सीएस कॉलेज ऑफ नर्सिंग तमिलनाडु की प्रचार्य एम. पोपसेल्वी ने शैक्षणिक शोध में आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस के भविष्य विषय पर प्रकाश डाला। एसजीआरआर कॉलेज ऑफ नर्सिंग की एसोसिएट प्रोफेसर पोन मारी ने धन्यवाद ज्ञापन पढ़ा। इस अवसर पर प्रोफेसर दिनेश्वरी, डॉ सुमन विज, डॉ मालविका सती कांडपाल, डॉ बनकोटी डॉ संजय शर्मा सहित नर्सिंग कॉलेज की फेकल्टी व छात्र-छात्राएँ उपस्थित रहे।

## छात्रों ने किसानों से मुलाकात



**पंतनगर।** पंतनगर विश्वविद्यालय के बीएससी अंतिम वर्ष के छात्रा व छात्राओं का उन्नतशील किसान व किसानों से घर-घर जाकर मिलने का कार्यक्रम के तहत आज शांतिपुरी नंबर 2 में डॉ गणेश उपाध्याय की आवास में किसान नेता किसान प्रभु दत्त जोशी, कुंदन सिंह देउपा, वीरेंद्र कोरंगा, विनोद जोशी आदि किसानों से अपने जानकारी साजा की। अच्छी खेती के लिए नई टेक्नोलॉजी के तहत जोड़ने के लिए छात्राओं ने निवेदन किया, किसानों ने कहा सरकार किसानों के प्रति उदासीन रवैया रहा है, जब तक किसानों को उनके फसल का वाजिब मूल्य नहीं मिलेगा, किसान खेती की पति रुझान अधिक नहीं कर पाएगा। आज देश में 68 से 70% किसान

खेती करते हैं। किसान खुशहाल तभी रहेगा जब तक न्यूनतम समर्थन मूल्य का तीन गुना व स्वामीनाथन की रिपोर्ट लागू नहीं होती देश का किसान खुशहाल नहीं हो पाएगा। छात्र-छात्राओं का सुझाव था कि किसानों व पंतनगर विश्वविद्यालय के विशेषज्ञों का एक ऐसा ग्रुप बनाया जाए, जो किसानों की समस्याओं का निराकरण करने के लिए प्रतिदिन मौसम से लेकर हर फसलों के बारे में जानकारी साझा करें। इस बात पर किसानों ने हामी भरी। इस अवसर पर छात्र छात्रों का के रूप लीडर निवेदिता सिंह, जय सिंह कारकी, मोहम्मद कुरेशी, खुशी भारती, अभिषेक बिष्ट, कमल भट्ट, हिमांशु जोशी, अनुपम कुमार आदि ने प्रतिभाग किया।

## पतंजलि विश्वविद्यालय में किया पूर्व स्नातक संगम का आयोजन

**हरिद्वार (शिक्षा का अधिकार)।** पतंजलि विश्वविद्यालय में 'पूर्व स्नातक संगम' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में ऑफ लाइन 450 तथा ऑनलाइन 120 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। इस अवसर पर स्वामी रामदेव महाराज ने कहा कि संकल्प में दृढ़ता से भविष्य निर्माण संभव है। शिक्षा के उपांगत जिम्मेदारी और बढ़ जाती है। इसलिए विद्यार्थियों को अपने तप को बढ़ाने की आवश्यकता है। शिक्षा का लाभ व्यक्ति, समाज व देश को मिले, तभी शिक्षा सार्थक होती है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय में पंचकर्म, षट्कर्म, पंचमहाभूत का नया पाठ्यक्रम प्रारंभ करने की योजना है तथा भावी योजनाओं में देश के लगभग सभी जिलों में पतंजलि वेलनेस केन्द्र स्थापित किया जाना प्रस्तावित है। जिसमें पतंजलि के विद्यार्थियों को वरीयता दी जाएगी। इससे लाखों रोजगार का सृजन होगा। भारतीय शिक्षा बोर्ड के माध्यम से भी भविष्य में लगभग एक लाख योग शिक्षकों की आवश्यकता होगी। विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को राष्ट्रीय व वैश्विक बड़े दायित्वों के लिए तैयार रहना

है। आचार्य बालकृष्ण ने कहा कि शिक्षा के उपानत वास्तविक परिवेश के साथ आपका सामना हो रहा है। संसार में व्याप्त संघर्षों का सामना हम अपने सामर्थ्य से करते हैं। सच मांनें तो हम परिस्थितियों का सामना जितना अपने आत्मबल और मनोबल से कर सकते हैं।

स्वामी, मुद्रक व प्रकाशक पूजा अग्रवाल द्वारा किरण प्रिंटिंग प्रेस, विष्णु गार्डन, निकट गुरुकुल कागड़ी फार्मसी, कनखल-हरिद्वार से मुद्रित करारकर नक्षत्रम् निकट रामऔषधालय, मौ0 होली, कनखल-हरिद्वार से प्रकाशित किया।

**सम्पादक**  
**पूजा अग्रवाल**  
मोबाइल- 9359380850